जेम्स वाट

(1736 - 1819)

स्टीम इंजन

जेम्स वाट का जन्म ग्रीनौक में हुआ था. वो स्कॉटलैंड में एक छोटा मछुआरों का गांव था. जेम्स बहुत होशियार था. स्कूल में उसका मन नहीं लगता था. इसलिए वो घर पर ही ठोका-पीटी और जुगाड़ें बनाता था.

जब वो स्कूल गया तो वो क्लास में पहले नंबर पर आया. पर उसकी हाज़िरी बहुत कम थी.

अंत में जेम्स को ग्लासगो यूनिवर्सिटी में वैज्ञानिक उपकरण मरम्मत करने की नौकरी मिली.

एक दिन जेम्स का मित्र उसके पास एक न्यूकोमिन स्टीम इंजन का मॉडल रिपेयर के लिए लाया.
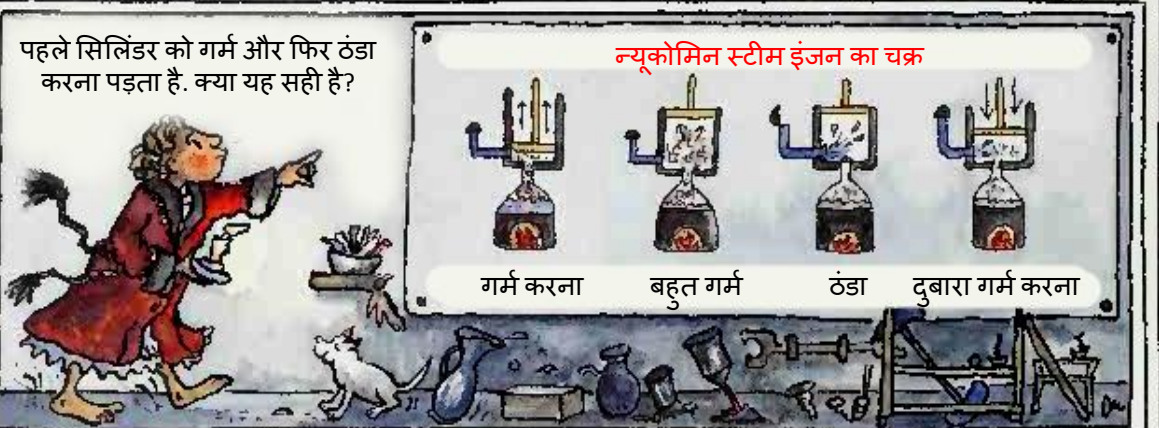
जेम्स ने उस इंजन के बारे में सुना था. इंजन का नाम उसके आविष्कारक थॉमस न्यूकोमिन पर पड़ा था. इंजन का उपयोग खदानों से पानी बाहर फेंकने के लिए किया जाता था. इंजन का विचार बहुत अच्छा था, लेकिन वो ठीक से काम नहीं करता था.
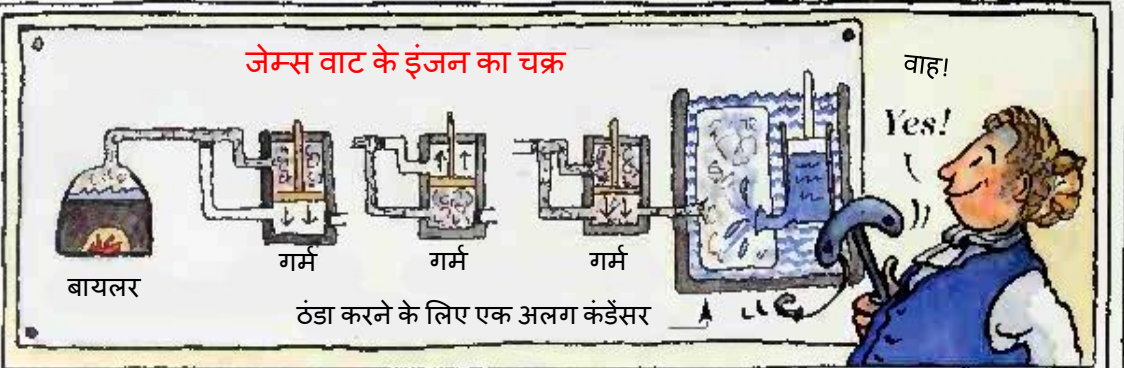
जेम्स टहलने गया था जब उसके दिमाग में एक बड़ा विचार आया. उसे लगा कि वो पुराने इंजन को बेहतर बना सकता था. उसके लिए जेम्स ने एक अलग कूलिंग चैम्बर बनाया जिसमें भाप खुद ठंडी हो सके.

पर फिर भी जेम्स अपने इंजन के निर्माण के लिए पैसा इकट्ठा नहीं कर पाया. ग्यारह साल उसने अलग-अलग नौकरियां कीं जिनसे वो नफरत करता था.

अंत में जेम्स को एक व्यापारी - मैथ्यू बोल्टन मिला. उन दोनों ने मिलकर एक पार्टनरशिप फर्म शुरू की.

BANG! CLANK! SLOOSH! BANG! CLANK! SLOOSH!

बैंग! बैंग!

वो तेज़ी से चल रहा है!

मेरा बच्चा!
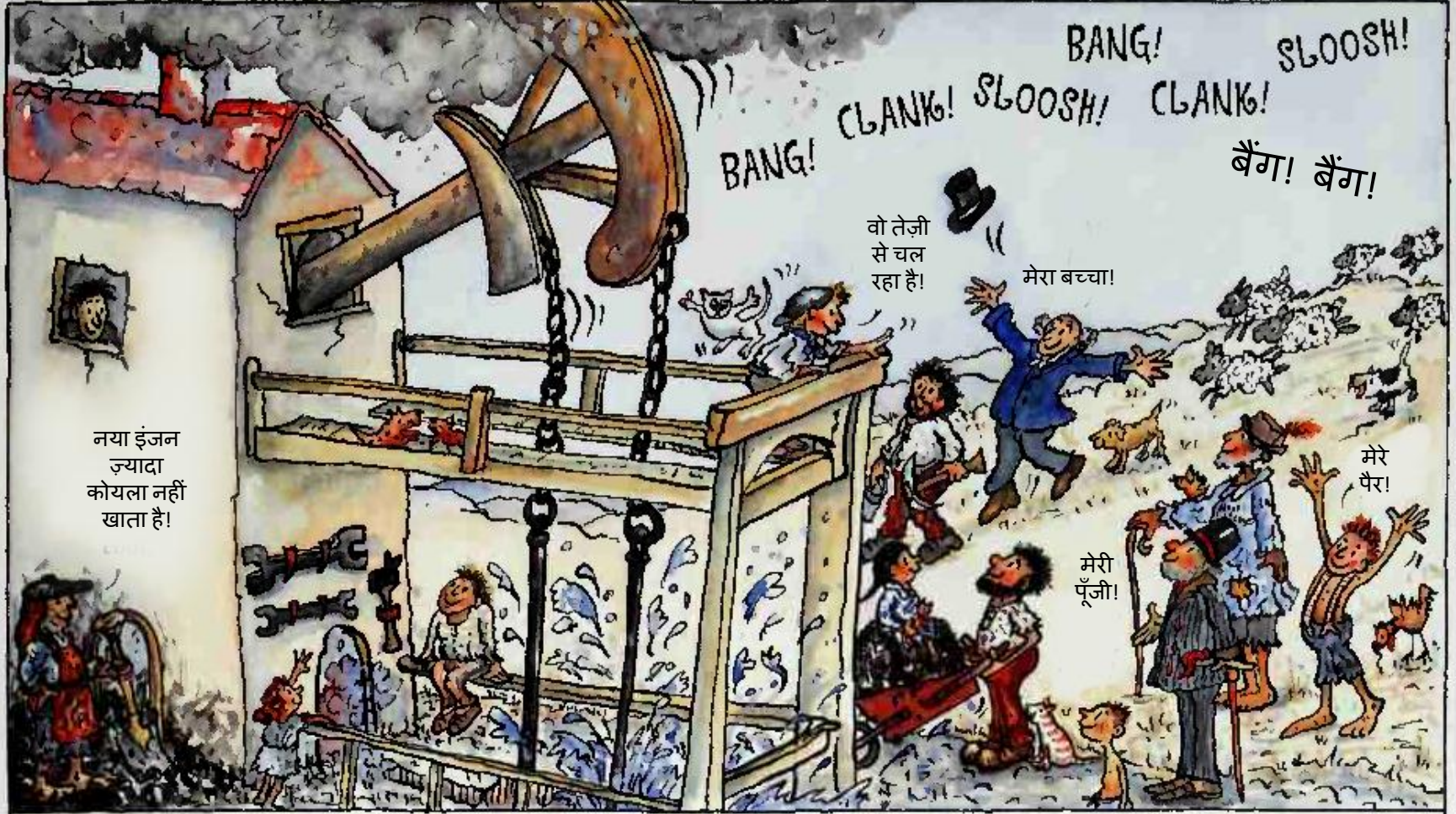
नया इंजन ज़्यादा कोयला नहीं खाता है!

मेरी पूँजी!

मेरे पैर!

जेम्स वाट का इंजन अंत में 1776 में बनकर तैयार हुआ. वो धड़ल्ले से खदानों में से पानी पंप करता था, और न्यूकोमिन इंजन की तुलना में बहुत कम कोयला खाता था. उससे खदानें सूखी रहती थीं. नए इंजन से अन्य उद्योगों जैसे कपड़ा निर्माण में तेज़ी से प्रगति हुई. जेम्स वाट अपने इंजन में लगातार सुधार करता रहा. अंत में वो बहुत धनी बना. अब उसे काम करने की ज़रुरत नहीं थी. फिर उसके दिमाग में एक चलने वाला इंजन बनाने की कल्पना आई. पर अंत में वो अपनी वर्कशॉप में वापिस गया और बाकी ज़िंदगी ठोका-पीटी करता रहा!